

---

# shrIguruvandanam 1

श्रीगुरुवन्दनम् १

## Document Information

---

Text title : guruvandanam 1

File name : guruvandanam1.itx

Category : deities\_misc, gurudev

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : NA

Description-comments : From bAlAsaparyA edited by S.V.Radhakrishnasastri

Acknowledge-Permission: Mahaperiaval Trust

Latest update : January 4, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## shrIguruvandanam 1

---

### श्रीगुरुवन्दनम् १

---



श्रीगणेशाय नमः ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो भूतेश्वरः ।  
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

ध्यानमूलं गुरोर्भूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।  
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं भोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥ २ ॥

नित्यानन्दं परमसुषुप्तं केवलं ज्ञानमूर्तिं  
भावातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।  
अेकं नित्यं विमलमयलं सर्वधीसाक्षिभूतं  
विश्वातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ ३ ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।  
यक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥

यैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम् ।  
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥

अप्येवमण्डलाकारं व्याप्तं येन यराचरम् ।  
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यत्किञ्चित्सयराचरम् ।  
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ७ ॥

यिन्मयं व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सयराचरम् ।  
असित्वं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ८ ॥

सञ्चिदानन्दरूपाय व्यापिने परमात्मने ।  
नमः श्रीगुरुनाथाय प्रकाशानन्दमूर्तये ॥ ९ ॥

ज्ञानशक्तिं समारुह्य तत्त्वमावाविभूषिणे ।

भुक्तिमुक्तिप्रदात्रे य तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १० ॥

अनेकजन्मसम्प्राप्त कर्मधर्मविदाङ्घ्रिने ।

ज्ञानानल्प प्रभावेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ११ ॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।

स्वात्मैव सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १२ ॥

गुरुः शिवो गुरुर्देवो गुरुर्बन्धुः शरीरिणाम् ।

गुरुरात्मा गुरुर्लुप्तो गुरोरन्यत्र विद्यते ॥ १३ ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं योगिनामप्यगम्यं

द्वन्द्वतीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्त्यादिलक्ष्यम् ।

येकं नित्यं विमलमयलं सर्वधीसाक्षीभूतं

भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ १४ ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।

नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥ १५ ॥

गुरुर्धाम्ना मङ्गिन्ना य शङ्करो यो विराजते ।

तत्पदाम्भोरुडरजः कणायास्तु नमो मम ॥ १६ ॥

गुरवे सर्वलोकानां भिषजे भवरोगिणाम् ।

निधये सर्वविधानां दक्षिणामूर्तये नमः ॥ १७ ॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वं अवात्मनसगोचरम् ।

रक्तशुक्ल प्रभामिश्रं अतर्क्यं त्रैपुरं मङ्गः ॥ १८ ॥

Proofread by NA

From Balasaparya edited by S.V.Radhakrishnasastri of Mahaperiaval Trust

This is a compilation from different sources.

---

shrIguruvandanam 1

pdf was typeset on September 17, 2023

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

